9- ब्लॉग-लेखन

१. शीर्षक (रोचक, आकर्षक, छोटा और विषय को स्पष्ट करने वाला हो। प्रश्नात्मक शैली में भी लिखा जा सकता है।)

२. समय :

३. स्थान :

४. भूमिका–अनुभव, उदाहरण, घटना से भी शुरूआत की जा सकती है, किंतु विषय को उभारने वाली बातें लिखी जाएँ। प्रश्नात्मक शैली भी अपना सकते हैं। मुख्यरूप से इसमें समस्या / विषय को ही स्पष्ट करते हैं जो अपने लेखन कार्य हेतु ले रहे हैं।

५. विषय-विस्तार–प्रश्न कर अनुसार बिंदुओं में बाँटकर कम-से-कम ३-४ अनुच्छेद। बिंदुओं को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण भी दें। विषय को क्यों? कैसे? से स्पष्ट करें।

६. उपसंहार–स्पष्ट किए गए बिंदुओं का सार–सुझाव / राय / सीख / संदेश।

७. पाठकों की राय / टिप्पणी माँगना।

लेखक का नाम

पाठकों की राय

- भाषा में समानता हो। कहीं कठिन, कहीं सरल ठीक नहीं है।
- दूसरे की भाषा की नकल न करें। अपने शब्दों में ही लिखें।
- विषयानुसार / प्रश्नानुसार, साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग करें, जिससे पाठक आपके विचारों को सरलता से समझ जाएँ।
- उपयुक्त व सरल शब्दों का प्रयोग करें।
- हिंदी भाषा का उचित शब्द उपलब्ध हो, तो उर्दू या संस्कृत के शब्द न लिखें।
- एक वाक्य में एक ही विचार हो। दो विचार होने से वाक्य कठिन हो जाता है।
- सरल और छोटे वाक्य बॉक्स के भीतर ही लिखें।

डायरी और ब्लॉग में अंतर–

- दोनों में ही अपने विचार और मनोभाव होते हैं किंतु डायरी व्यक्तिगत होती है जबकि ब्लॉग सभी पढ़ सकते हैं।
- ब्लॉग में विचार और तर्क होते हैं जबकि डायरी में मनोभाव और सीख।

उदाहरण–सामाजिक मीडिया के दुरुपयोग के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए लगभग २०० शब्दों का ब्लॉग लिखिए।

Blogspot.com

१५ जून, २०XX

मंगलवार

सामाजिक मीडिया का दुरुपयोग : एक ज्वलंत समस्या

भूमंडलीकरण के इस दौर में सामाजिक मीडिया के बढ़ते प्रभाव के बारे में हम सब जानते हैं और हम में से लगभग सब किसी-न-किसी रूप में सामाजिक मीडिया से जुड़े हुए हैं। चाहे फेसबुक हो या इंस्टाग्राम या ट्विटर हम सबने खाते खोले हैं और अपनी इच्छानुसार परिचित/अपरिचित से हम अपने विचारों को साझा करते आ रहे हैं। यह आज युवा पीढ़ी के गैर जिम्मेदाराना रवैया के कारण फायदे से अधिक नुकसान का कारण बनता जा रहा है। एक समय था, युवक-युवतियाँ सामाजिक मीडिया द्वारा महत्वपूर्ण संदेश फैलाते थे। समाज के लिए कल्याणकारी अभियान भी चलाते थे। ऐसे मित्रों से संपर्क जोड़ पाते थे जिनसे वे काफ़ी समय तक जुड़ नहीं पाए थे। आज इसका कुछ अलग ही रूप नजर आ रहा है। आज एक-दूसरे को नीचा दिखाना, मित्रों की निजी बातों को सार्वजनिक करना, असभ्य भाषा का प्रयोग आदि के लिए सामाजिक मीडिया का इस्तेमाल किया जा रहा है। यहाँ तक कि आपसी लड़ाई-झगड़ों का फेसबुक में सीधा प्रसारण तक किया जा रहा है। अगर इस प्रकार के दुरुपयोग को समाज और प्रशासन नजरअंदाज करता रहा तो स्थिति बिगड़ सकती है जो समाज के लिए अत्यंत हानिकारक साबित होगा।

इसलिए मैं मित्रों से विनम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ कि वे सामाजिक मीडिया का प्रयोग करते समय सोच-समझकर अपने विचार साझा करें। हमेशा संयम रखें और प्रयास करें कि हम किसी भी व्यक्ति, धर्म, भाषा, राष्ट्रीयता की भावना को ठेस ना पहुँचाएँ। एक जिम्मेदार नागरिक होने का कर्तव्य निभाएँ। इस विषय पर पाठकों की राय जानने को मैं बहुत उत्सुक हूँ। कृपया अपनी प्रतिक्रिया दें और इस विचार को अपने मित्रों में फैलाएँ।

धन्यवाद,

विदित

प्रतिक्रिया दें–

प्रिय विदित,

मैं तुम्हारी बात से बिल्कुल सहमत हूँ और कई बार मैंने भी यह महसूस किया है कि कई युवक सामाजिक मीडिया का गलत इस्तेमाल करते हैं जो उनके बीच मनमुटाव का कारण बन जाता है। मैं भी इस अभियान में तुम्हारे साथ हूँ।

धन्यवाद,

रिद्धि Ridhi.shah@gmail.com